

- अपनी गली में कुत्ता भी शेर = मनुष्य अपने घर या प्रभाव क्षेत्र में चाहे जैसा व्यवहार कर सकता है परंतु घर के बाहर उसे सावधानी से व्यवहार करना पड़ेगा।
- अपनी नाक कटाकर दूसरे का असगुन मनाना = दूसरे को हानि पहुँचाने के लिए अपनी कुछ हानि भी कर लेना दुष्टों का सामान्य स्वभाव है।
- अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना = अपनी प्रशंसा स्वयं करना हास्यास्पद है।
- अभी दिल्ली दूर है = 1. अभी बहुत कार्य शेष है।
2. अभी लक्ष्य प्राप्ति बहुत दूर है।
- अँतरे खोंतरे डंड करै, ताल नहाय, ओस में परै दैव न मारे आप ही मरै = जो मनुष्य दूसरे-चौथे दिन व्यायाम करता है, तालाब में नहाता है और ओस में सोता है, उसे दैव नहीं मारता वह स्वयं ही मरता है।
- आग लगने पर कुआँ नहीं खोदा जाता = किसी संकट के आ जाने पर उससे बचने के लिए साधन का निर्माण करने से काम नहीं चलता, उसके लिए तो पहले से ही तैयार रहना उचित होता है।
- आदत बुरी बला/बलाय = स्वभाव सरलता से नहीं बदला जा सकता इसीलिए बुरा स्वभाव बड़ा कष्टकर होता है।
- आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे = 1. जो कुछ अपने पास है, उसी से संतुष्ट न रहकर जो दूसरी वस्तुओं की कामना से दौड़ा-भागा फिरता है, वह उसे भी खो बैठता है जो उसके पास था।
2. अधिक लालच से हानि होती है।
- आप भला तो जग भला = 1. यदि व्यक्ति स्वयं अच्छा है, तो उसे सभी लोग अच्छे ही प्रतीत होंगे।
2. अच्छे व्यक्ति के साथ सब लोग अच्छा व्यवहार ही करेंगे।
- अपने मरे बगैर स्वर्ग नहीं मिलता = व्यक्ति स्वयं के प्रयत्न से ही अपना कार्य सिद्ध कर सकता है दूसरों के भरोसे से नहीं।
- अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत = अवसर निकल जाने पर पश्चात्ताप करना व्यर्थ है।